Ijtmai Etikaaf Ki 12 Madani baharen (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 345
Weekly Booklet : 345

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" की एक क़िस्त बनाम

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 12 मदनी बहारें

सफ़हात 18

ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ 03
ए'तिकाफ़ ने तहज्जुद गुज़ार बना दिया 13
ए'तिकाफ़ की बरकत से अनबन ख़त्म हो गई 07
कोमेडियन मुबल्लिग़ बन गया 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 12 मदनी बहारें**

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक **1444** हि., मार्च **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 12 मदनी बहारें**"

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए Whatsapp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद –1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 12 मदनी बहारें(1)

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला : **''इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 12 मदनी बहारें''** पढ़ या सुन ले उसे रमज़ान शरीफ़ की ख़ूब बरकतें नसीब फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** करीम के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : ﴾1﴿ वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे ﴾2﴿ मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला ﴾3﴿ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। (البدور السافرۃ، ص131، حدیث:366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी और माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़

ए'तिकाफ़ बड़ी पुरानी इबादत है, क़ुरआने करीम में भी इस का ज़िक्र है, पहली उम्मतों में भी लोग ए'तिकाफ़ करते रहे हैं। आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' सुन्नतों भरी तह़रीक है। दीने

1... इस रिसाले की तमाम मदनी बहारें किताब ''फ़ैज़ाने रमज़ान'' सफ़ह़ा 418 ता 431 ली गई हैं।

मतीन की ख़िदमात आ़म करने वाली येह मुन्फ़रिद तह़रीक गुज़श्ता चन्द सालों से माहे रमज़ानुल मुबारक के न सिर्फ़ आख़िरी अ़शरे बल्कि पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ करवा रही है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! अब तक लाखों आ़शिक़ाने रसूल दा'वते इस्लामी के "इज्तिमाई ए'तिकाफ़" से फ़ैज़याब हो चुके हैं जिस के सबब सैंकड़ों नहीं हज़ारों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब आ गया। शराब का आ़दी शराब के नशे से निकल कर मए इ़श्क़े रसूल से सरशार हो गया, गुनाहों का आ़दी राहे सुन्नत पर चलने वाला बन गया। लह्व लइ़ब (या'नी खेलकूद) में वक़्त बरबाद करने वाला ज़िक्रो दुरूद पढ़ने वाला बन गया, गाने गुनगुनाने वाला ना'ते पाके मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ने लग गया, अल ग़रज़ इस इज्तिमाई ए'तिकाफ़ ने लोगों की ज़िन्दगियां बदल कर रख दीं। ऐसे ही चन्द ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल की 12 मदनी बहारों पर मुश्तमिल येह रिसाला पढ़ें, जिन पर सुन्नतों के मुबल्लिग़ीन की सोह़बत में रहने के सबब ऐसा मदनी रंग चढ़ा कि न सिर्फ़ ख़ुद राहे सुन्नत पर चलने वाले बन गए बल्कि दूसरों को भी नेकी की दा'वत देने लग गए। मदनी मश्वरा है कि ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक के "इज्तिमाई ए'तिकाफ़" की निय्यत फ़रमा लीजिये।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾1﴿ ए'तिकाफ़ की बरकत से शहर के लिये मदनी मर्कज़ मिल गया

चित्रदुर्गा (सूबए कर्नाटक, हिन्द) की "मस्जिदे आ'ज़म" के

मुतवल्लियान और कुछ मक़ामी मुसल्मान, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के बारे में बा'ज़ ग़लत़ फ़हमियों का शिकार थे। बहुत मुश्किल से वहां रमज़ानुल मुबारक में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की इजाज़त मिली। दो मुतवल्लियों के साह़िब ज़ादगान भी साथ ही मो'तकिफ़ हो गए। मदनी मर्कज़ के अ़त़ा कर्दा जद्वल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों भरे ह़ल्क़े, सुन्नतों भरे बयानात, ना'तों की धूमधाम, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़एं और कसीर मो'तकिफ़ीन का ह़ुस्ने इन्तिज़ाम देख कर मुतवल्ली साह़िबान ह़ैरान रह गए और इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि आख़िरी दिन तमाम मो'तकिफ़ीन को तह़ाइफ़ व गुलपोशी से नवाज़ा। दा'वते इस्लामी इन सब की समझ में आ गई और उन ह़ज़रात ने अपने ज़ेरे तौलियत अ़ज़ीमुश्शान "मस्जिदे आ'ज़म" में दा'वते इस्लामी को दीनी कामों की मुकम्मल त़ौर पर छूट दे दी और اَلْحَمْدُلِلّٰه "मस्जिदे आ'ज़म" उस शह़र का "मदनी मर्कज़" बन गई। اَلْحَمْدُلِلّٰه दोनों मुतवल्लियों के मज़्कूरा साह़िब ज़ादगान ने अपने चेहरे दाढ़ी मुबारक से आरास्ता कर लिये और दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए।

ज़िक्र करना ख़ुदा का यहां सुब्ह़ो शाम दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पाओगे ना'ते महबूब की धूमधाम दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642, 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾2﴿ ए'तिकाफ़ का फ़ैज़

रमज़ानुल मुबारक (1410 हि., 1990 ई.) में एक इस्लामी भाई की **इंग्लेन्ड** से आमद हुई। इस्लामी भाइयों के तवज्जोह दिलाने पर

उन के एक रिश्तेदार इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें आ़शिक़ाने रसूल के साथ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के लिये राज़ी कर लिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह मो'तकिफ़ हो गए। एक ख़ालिस अंग्रेज़ी माहोल में रहने वाला जब ए'तिकाफ़ में बैठा और उस ने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें और ज़रूरी अह़काम सीखे, क़ब्रो आख़िरत के अह़वाल सुने तो मुसल्मान होने के नाते उस का दिल चोट खा कर रह गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकत से उन्हें गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा मिला और आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आ गए। चेहरे पर दाढ़ी सजा ली, सर इमामा शरीफ़ से सजा लिया, फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स और बयान सीख कर दौराने ए'तिकाफ़ ही सुन्नतों भरा बयान करने लगे ! इंग्लेन्ड में जा कर दा'वते इस्लामी के दीनी कामों की धूमें मचाने की निय्यत की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह इंग्लेन्ड में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी और बारह दीनी कामों के ज़िम्मेदार बने, उन के बच्चों की अम्मी भी दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर इंग्लेन्ड जैसे ह़या सोज़ माह़ोल में रहते हुए भी मदनी बुरक़अ़ ओढ़ती हैं, ख़ुद दुरुस्त क़ुरआने करीम सीख कर अब मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) में इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं और इस्लामी बहनों के दीनी कामों की तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार हैं।

कर के हिम्मत मुसल्मानो आ जाओ तुम दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उख़्वी दौलत आओ कमा जाओ तुम दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

एक इस्लामी भाई जब नवीं जमाअ़त में पढ़ते थे। क्लास में उन का एक फ्रेन्ड सर्कल था, येह सब स्कूल से भाग जाते, ख़ूब आवारा गर्दी करते, रात गए तक क्रिकेट खेलते, इन्टरनेट क्लब में ठीकठाक वक़्त बरबाद करते, सारा सारा दिन मिलजुल कर केबल पर फ़िल्में देखते, गाने सुनने का तो इस क़दर चस्का था कि रात गाने सुनते सुनते सोना और सुब्ह़ जागते ही सब से पहला काम مَعَاذَاللہ येही मन्हूस गाने सुनना। फ़ेन्सी लिबास पहन कर येह लोग मिलजुल कर مَعَاذَاللہ ثُمَّ مَعَاذَاللہ लड़कियों के साथ छेड़ ख़ानियां और ख़ूब बद निगाहियां करते। उस इस्लामी भाई की मां कभी समझाती भी तो उलटा उसी के गले पड़ जाते। वालिद साहि़ब नमाज़ का हुक्म फ़रमाते तो उन को भी चक्मा दे देते। अफ़्सोस! इस्लाह़ की दूर दूर तक कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। **अल्लाह** पाक उन के बड़े भाई साहि़ब का भला करे जिन्हों ने उन की दस्त गीरी की और उन्हें रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे के अन्दर ए'तिकाफ़ में बैठने के लिये कहा। उन को सह़ीह़ मा'नों में येह भी पता नहीं था कि ए'तिकाफ़ क्या होता है! उन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया। मगर बड़े भाई ने किसी त़रह़ भी समझा बुझा कर आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बिठा दिया। चार या पांच दिन तक बिल्कुल भी दिल न लगा और येह भागने की कोशिश करते रहे मगर काम्याब न हो सके। इस के बा'द सुरूर आना शुरूअ़ हुवा और फिर तो वोह रूह़ानी सुकून मिला कि चांदरात को येह

कह रहे थे कि मुझे घर नहीं जाना है, मैं आज की रात भी यहीं फ़ैज़ाने मदीना में गुज़ारना चाहता हूं।

तुम घर को न खींचो नहीं जाता नहीं जाता मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾4﴿ ए'तिकाफ़ की बरकत से घुटनों का दर्द चला गया

जामिअ़तुल मदीना के एक त़ालिबे इ़ल्म को आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां उन की मुलाक़ात एक सिन रसीदा बुज़ुर्ग से हुई, उन्हों ने बताया : कई साल से मेरे घुटनों में दर्द था, जब मैं मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ के लिये आया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه उस की बरकत से मुझ पर करम हुवा कि मेरे घुटनों का दर्द दूर हो गया।

दर्द टांगों में हो, दर्द घुटनों में हो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पेट में दर्द हो या कि टख़्नों में हो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾5﴿ दाढ़ी सजी "सर बा इ़मामा" हो गया

नवसारी (सूबए गुजरात, हिन्द) के एक मॉडर्न इस्लामी भाई, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1423 हि., 2002 ई.) में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ (सूरत, गुजरात) में मो'तकिफ़ हुए। मदनी जद्वल के मुत़ाबिक़ लगने वाले सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और ज़िक्रो ना'त

की पुरसोज़ सदाओं ने उन का दिल मोह लिया, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत से वोह फ़ैज़ मिला कि न पूछो बात ! दाढ़ी मुबारक सजी, सर इ़मामे शरीफ़ से सज गया और तरक़्क़ी की मनाज़िल तै़ करते हुए ता दमे तह़रीर अपने शह़र की मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से दीनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

सुन्नतों की तुम आ कर के सौग़ात लो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ बटती है रह़मत की ख़ैरात लो दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾6﴿ अनबन ख़त्म हो गई

एक इस्लामी भाई अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी जो कि लेब इन्चार्ज थे, उन के दो बेटे दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर वोह ख़ुद नमाज़ों और सुन्नतों से दूर थे और ज़ेह्न मुकम्मल तौ़र पर दुन्यादारों वाला था। रमज़ानुल मुबारक में इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की गई तो फ़रमाने लगे : मेरे बच्चों की अम्मी नाराज़ हो कर मयके जा बैठी हैं, अगर मैं ए'तिकाफ़ करूंगा तो क्या वोह आ जाएंगी ? उन्हें बताया गया : اِنْ شَآءَاللہ आ जाएंगी। चुनान्चे वोह आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1416 हि., 1995 ई.) में फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गए। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों, सुन्नतों भरे बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुरसोज़ ना'तों ने उन का दिल बदल कर रख दिया ! उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली, नमाज़ों की पाबन्दी का अ़ह्द किया, दाढ़ी

मुबारक व इमामा शरीफ़ से आरास्ता हो गए और ना'तें भी पढ़ने लगे। ए'तिकाफ़ के दौरान ही रूठी हुई बच्चों की अम्मी भी घर वापस आ गईं और घरेलू शकर रन्जियां भी ख़त्म हो गईं। ए'तिकाफ़ की बरकत से वोह मदनी लिबास पहनने लगे और उन्हों ने मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी किये। दीनी माहोल में रहते हुए उसी साल या'नी बरोज़ जुमे'रात **27** रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को उन का इन्तिक़ाल हो गया। اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

गोरे तीरह को तुम जगमगाने चलो दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
राहतें रोज़े महशर की पाने चलो दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ज़िन्दगी के आख़िरी साल के मुतअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रत नाक रिवायत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह "मदनी बहार" वाक़ेई अपने अन्दर इ़ब्रत के कई मदनी फूल लिये हुए है। मर्हूम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ख़ुश नसीब थे कि वफ़ात से थोड़े ही अ़र्से क़ब्ल उन्हें दीनी माहोल मुयस्सर आ गया और यक़ीनन वोह बन्दा मुक़द्दर वाला है जो मरने से पहले पहले तौबा कर के राहे रास्त पर आ जाए और सुन्नतों की शाहराह पर चल पड़े और बड़ा ही बद नसीब है वोह शख़्स जो अच्छा भला नेकियां करने वाला और सुन्नतों के रास्ते पर चलने वाला हो कर मरने से थोड़े ही अ़र्से क़ब्ल مَعَاذَاللّٰه मॉडर्न हो जाए और गुनाहों में पड़ कर दीनी माहोल से दूर जा पड़े। जब भी आप को शैतान किसी ज़िम्मेदार फ़र्द से

नाराज़ करवा कर या यूं ही सुस्ती दिला कर या दुन्यवी कारोबार में ख़ूब फंसा कर या शादी वग़ैरा का जोश दिला कर दीनी माहोल से दूर होने का मश्वरा दे तो इस ह़दीसे पाक पर ग़ौर फ़रमा लिया करें : उम्मुल मुअमिनीन तमाम मुसल्मानों की प्यारा प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के मरने से एक साल पहले एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है। जब ऐसा ख़ुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है, उस वक़्त वोह **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** पाक उस की मुलाक़ात को। जब **अल्लाह** पाक किसी के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है तो मरने से एक साल क़ब्ल एक शैत़ान उस पर मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है, उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटकने लगती है, उस वक़्त येह शख़्स **अल्लाह** पाक से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** पाक इस से मिलने को। (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 5/443، حدیث:157 ملخصاً)

गुनह करते हुए गर मर गया तो क्या करूंगा मैं

बनेगा हाए ! मेरा क्या करम फ़रमा करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾7﴿ घर वाले घर से निकाल देते थे

एक इस्लामी भाई पहले पहल बहुत ज़ियादा बिगड़े हुए नौ जवान थे, रात जब तक गानों की तीन चार केसिटें न सुन लेते नींद न आती, सारी सारी रात आवारा गर्दियों और गुनाहों में बसर हो जाती, बात बात पर घर में झगड़ते, घर वाले बेज़ार हो कर घर से निकाल देते, दो एक दिन इधर उधर भटक्ते फिरते इस के बा'द तरकीब बन जाती। अल ग़रज़ उन की ज़िन्दगी के दिन इन्तिहाई ग़लत अन्दाज़ पर बरबाद हो रहे थे। आशिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान जो कि इन के कज़िन थे उन्हों ने इन पर इन्फ़िरादी कोशिश की और आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1425 हि., 2004 ई.) में उन्हें दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में ला बिठाया। एक मुबल्लिग़ के हुस्ने अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और उन्हीं के हाथों इमामे शरीफ़ से अपना सर सजा लिया। 27वीं शब सुन्नतों भरे बयान के बा'द होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने दिल पर बहुत ज़ियादा असर किया, उन पर गिर्या त़ारी हो गया और वोह सुब्ह़ तक रोते रहे। ईद के दूसरे रोज़ फ़ज्र के वक़्त अभी आंख न खुली थी कि एक बुज़ुर्ग ख़्वाब में नज़र आए और उन्हों ने उन का नाम ले कर पुकारा : ''फ़ज्र का वक़्त हो गया है और आप अभी तक सोए हुए हैं !'' उन्हों ने फ़ौरन नींद ही में दोनों हाथ क़ियाम की त़रह़ बांध लिये और आंख खुल गई तो हाथ उसी त़रह़ बंधे हुए थे। इस से दिल पर बड़ा असर पड़ा और उन्हों ने मस्जिद में जा कर बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा की। अपने शह्र

के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से ह़ाज़िरी देते रहे। **अल्लाह** पाक ने ऐसा करम बालाए करम फ़रमाया कि जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी करने की सआ़दत ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दी। अपने दरजे में नेक आ'माल के तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़िम्मेदार बने, **अल्लाह** पाक का उन पर येह भी करम हुवा कि त़लबा के जो 92 नेक आ'माल हैं उन सभी पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल हुई। **अल्लाह** पाक उन को इस्तिक़ामत इ़नायत फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

छूट जाएगी फ़िल्मों डिरामों की लत दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़ुश ख़ुदा होगा बन जाएगी आख़िरत दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ मस्जिद का ख़तीब बना दिया

एक इस्लामी भाई ने आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में क़ुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल की, मगर अफ़्सोस कि फिर भी पक्के नमाज़ी न बन सके। اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के साथ रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ की सआ़दत मिली, दिल पर मदनी चोट लगी, ग़फ़्लत की नींद उड़ी, ह़क़ीक़ी मा'नों में आंख खुली और वोह नमाज़ों के पाबन्द हो गए। ए'तिकाफ़ के सबब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का ज़ेह्न बना। वोह बे रोज़गार थे, जिस दिन मदनी क़ाफ़िले की निय्यत की उन के यहां की मुशावरत के निगरान ने फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰہ आप का काम हो

जाएगा । اَلْحَمْدُلِلّٰه मदनी क़ाफ़िले की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि जिस मस्जिद में उन का मदनी क़ाफ़िला गया वहां की इन्तिज़ामिया को उन इस्लामी भाई का बयान और अन्दाज़े दुआ भा गया और उन्हों ने उन्हें उस मस्जिद का ख़तीब बना दिया ! यूं उन के रोज़गार की भी सबील बनी । अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त उन्हें दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तंगदस्ती का हल भी निकल आएगा दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

रोज़गार اِنْ شَآءَاللّٰه मिल जाएगा दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ उ़म्र ग़फ़्लत में गुज़र रही थी

मोडासा (गुजरात, अल हिन्द) के एक मॉडर्न नौ जवान की उ़म्रे अ़ज़ीज़ ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी, गुनाहों का सिल्सिला था, ऐसे में करम हो गया ! सबबे करम यूं हुवा कि माहे रमज़ानुल मुबारक (1423 हि., 2002 ई.) के आख़िरी अ़शरे में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठना नसीब हो गया, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बते बा बरकत के क्या कहने ! सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुरकैफ़ ना'तों के फ़ैज़ान से उन की काया पलट गई और वोह मदनी जज़्बा अ़ता हुवा कि ए'तिकाफ़ ही के अन्दर उन को दर्सो बयान करने की सआ़दत मिल गई ! दाढ़ी मुबारक और इमामा शरीफ़ सजाने की निय्यत की । आ़शिक़ाने रसूल के साथ एक माह

के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। चूंकि काफ़ी बा सलाहिय्यत थे लिहाज़ा इस्लामी भाइयों ने मुतअस्सिर हो कर उन को अमीरे क़ाफ़िला बना दिया !

आ़शिक़ाने रसूल आओ देंगे बयां दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होंगी इबादात की ख़ामियां दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾10﴿ वोह तहज्जुद गुज़ार बन गए

एक उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई को आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1425 हि., 2004 ई.) में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों का बा क़ाइदा जद्वल बना हुवा था। जिन में नमाज़ के अह़काम और रोज़मर्रा की सुन्नतें वग़ैरा सीखने को मिलीं, 10 दिन में उन्हों ने वोह वोह सीखा जो गुज़री हुई ज़िन्दगी में न सीख पाए थे। सुन्नतों भरे बयानात की समाअ़त और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से फ़िक्रे आख़िरत नसीब हुई, क़ल्ब में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और 72 नेक आ'माल पर अ़मल का जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दूसरा "नेक अ़मल" बिल ख़ुसूस मज़बूती से थाम लिया और इस की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करने की आ़दत बना ली, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! उन्हें तहज्जुद पर भी इस्तिक़ामत ह़ासिल हुई। नेक आ'माल का रिसाला हर

माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने और हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी शिर्कत की सआ़दत पाने लगे।

बा जमाअ़त नमाज़ों का जज़्बा मिले दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दिल का पज़मुर्दा ग़ुन्चा ख़ुशी से खिले दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾11﴿ आक़ा अपना दीदार करा दीजिये

एक इस्लामी भाई आ़म नौ जवानों की त़रह़ मॉडर्न और फ़िल्में ड्रामे देखने के शौक़ीन थे। ख़ुश क़िस्मती से आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक में आ़शिक़ाने रसूल के साथ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत मिल गई। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की भी क्या बात है! उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा दीनी माहोल देखा था, दिलो जान से दा'वते इस्लामी के शैदाई हो गए। उन्हें सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का बड़ा अरमान था, ए'तिकाफ़ में रोज़ाना दीदार के लिये दुआ़ मांगते थे। 27वीं शब आ गई, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त हुवा, ज़िक्रुल्लाह में उन पर बेख़ुदी की सी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई फिर जब रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई तो उन्हों ने आंखें बन्द किये रो रो कर बस एक येही तक्रार की : "आक़ा अपना दीदार करा दीजिये!" यकायक आंखों में एक बिजली सी कूंदी और एक नूरानी चेहरे की ज़ियारत हुई और उन्हें यक़ीन हो गया कि येह तो मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं! आह! आह! फिर चेह्रए मुबारक निगाहों से ओझल हो गया। आह!

शरबते दीद ने इक आग लगाई दिल में तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से तह में रखखा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 71)

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! उन्हों ने गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी और इ़मामा शरीफ़ सजाने की निय्यत भी कर ली। اَلْحَمْدُلِلّٰه ईद के दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ हाथों हाथ तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। और जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी शुरूअ़ कर दिया, रूह़ानी इ़लाज का भी कोर्स किया और मजलिसे मक्तूबातो रूह़ानी इ़लाज की त़रफ़ से सोंपी हुई ज़िम्मेदारी के मुत़ाबिक़ रूह़ानी इ़लाज का बस्ता भी लगाते नीज़ जामिअ़तुल मदीना के अन्दर अपने दरजे में मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार भी बने।

गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ कॉमेडियन मुबल्लिग़ बन गया

बाला सिनोर (गुजरात, हिन्द) के एक नौ जवान जो कॉमेडियन थे। उलटे सीधे चुटकुले सुना कर लोगों को हंसाना उन का मश्ग़ला था, शादियों में मीमीक्री फंक्शन के लिये उन को बुलवाया जाता था। आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक में उन्हें आ़शिक़ाने रसूल के साथ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत ह़ासिल हुई। अब तक धन कमाने ही की

धुन थी, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! ए'तिकाफ़ के दीनी माहौल में आख़िरत बनाने की लगन पैदा हो गई, साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों के मुबल्लिग़ बन गए, अपने आप को दा'वते इस्लामी के लिये पेश कर दिया। ता दमे तह़रीर तन्ज़ीमी तौ़र पर आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की एक डिवीज़्नल मुशावरत के निगरान की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के दीनी कामों की धूमें मचा रहे हैं, दीन के लिये उन की क़ुरबानियों का ह़ाल येह है कि माहाना 25 दिन दीनी कामों के लिये वक़्फ़ हैं।

اِنْ شَآءَاللّٰه भाई सुधर जाओगे दीनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे दीनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

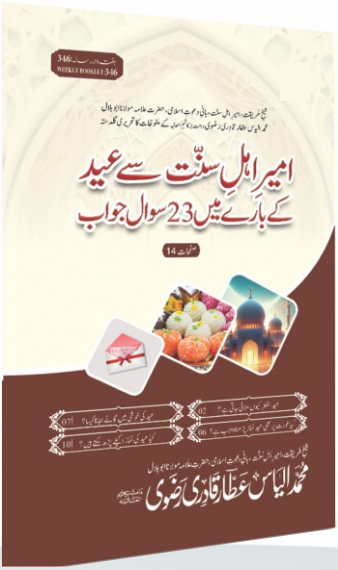

ہفتہ وار رسالہ: 346
WEEKLY BOOKLET:346
شیخ طریقت، امیر اہل سنت، بانی دعوت اسلامی، حضرت علامہ مولانا ابو بلال
محمد الیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتہم العالیہ کے ملفوظات کا تحریری گلدستہ
امیر اہلِ سنّت سے عید
کے بارے میں 23 سوال جواب
صفحات 14
عید الفطر کیوں منائی جاتی ہے؟ 02
کیا عورت پر بھی عید نماز پڑھنا واجب ہے؟ 06
عید کی خوشی میں گانے بجانا کیسا؟ 07
کیا عید کی نماز اکیلے پڑھ سکتے ہیں؟ 10
شیخ طریقت، امیر اہل سنت، بانی دعوت اسلامی، حضرت علامہ مولانا ابو بلال
محمد الیاس عطار قادری رضوی